

(E) संगठन सम्बन्धी कारक

- समयसारणी, अनुशासन, अध्यापक-छात्र सम्बन्ध, निर्देशन व परामर्श, बैठक व्यवस्था

अधिगम के नियम (थॉर्नडाइक)

(1) तत्परता का नियम

- किसी कार्य को करने के लिये हम शारीरिक व मानसिक रूप से तैयार हैं तो उसे हम सीख जाते हैं अन्यथा नहीं
- जैसे:- घोटु को तालाब तक ले जाया जा सकता है लेकिन पानी पीने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता
- इस नियम का प्रयोग रुचि उत्पन्न करने, ध्यान केंद्रित करने व जिज्ञासा जागृत करने में लिया जाता है।

(2) अभ्यास का नियम:-

- किसी भी कार्य को बार-बार करके सीख जाना। दो प्रकार (i) उपयोग, (ii) अनुपयोग
- इस नियम का प्रयोग आदत निर्माण, लेखन सुधार, उच्चारण सुधार तथा कला प्रशिक्षण में लिया जाता है।

(3) प्रभाव/सन्तोष/परिणाम का नियम:-

- किसी भी क्रिया या कार्य को सीखना उसके परिणाम पर निर्भर करता है
- जैसे:- प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड

अधिगम के गौण नियम:-

(1) बहुप्रतिक्रिया का नियम:-

- जैसे:- गाड़ी चलाना, कम्प्यूटर चलाना (बहुत सी क्रियाओं को करके सीखना)

(2) आंशिक क्रिया का नियम:-

⇒ विषयवस्तु को दोट्टे-2 भागों में विभाजित करते हुये अंश से पूर्ण की ओर सीख जाना।

(3) मनोवृत्ति (Attitude):-

⇒ सीखना सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

(4) आत्मीकरण का नियम:-

⇒ पूर्वज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करते हुये सीख जाना।

(5) साहचर्य परिवर्तन:-

⇒ एक परिस्थिति में किये गये कार्य या व्यवहार को दूसरी परिस्थिति में करना साहचर्य है।

अधिगम के उपनियम:-

- (1) नवीनता
- (2) प्राथमिकता
- (3) सम्बद्धता का नियम
- (4) उत्तेजन की तीव्रता का नियम

अधिगम के सिद्धांत

(A) अधिगम के व्यवहारवादी सिद्धांत:-

- ⇒ व्यवहारवादी विचारधारा में प्रशिक्षण, अनुभव, वातावरण, व्यवहार, अनुबंधन को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।
- ⇒ व्यवहारवादी विचारधारा में पशुओं/जानवरों पर प्रयोग हुये हैं।
- ⇒ इस विचारधारा के अनुसार अध्यापक अधिगम परिस्थितियों का निर्माता होता है।

S-R पुनर्बलन



थॉर्नडाइक, C.L. हल

पावलव, स्कीनर,

मिलर

S-R अपुनर्बलन



गुथरी, वाटसन, एरसेट

(1) प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धांत :-

अन्यनाम:-

(i) उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धांत (S-R थ्योरी)

(ii) संयोजनवाद का सिद्धांत

(iii) बन्ध का सिद्धांत

(iv) आवृत्ति का सिद्धांत

(v) र्छ व दुरव का सिद्धांत

(vi) परिश्रम व धैर्य का सिद्धांत

प्रतिपादक: थॉर्नडाइक - 1898

Books - एनीमल इन्टेलीजेन्स

प्रयोग - भूखी बिल्ली पर

उद्दीपक - मदली का टुकड़ा

⇒ इस सिद्धांत में तीन चरण थे -

(1) विभिन्न अनुक्रियाएँ करना

(2) सही अनुक्रियाओं का चुनाव करना

(3) उद्दीपक अनुक्रिया में सम्बन्ध स्थापित करना

इस सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता

(1) गणित, विज्ञान तथा समाजशास्त्र में उपयोगी है।

(2) मंदबुद्धि व बड़ी आयु के लिये उपयोगी

(3) क्रमिक रूप से सीखने, करके सीखने, अनुभव द्वारा सीखने व अभिप्रेरणा से सीखने पर बल देता है।

विभेदन :- मूल उद्दीपन व कृत्रिम उद्दीपन में अन्तर करना

अनुबन्धन को प्रभावित करने वाले कारक :-

- (1) प्रेरक का प्रभाव (भूख)
- (2) उत्तेजन का सम्बन्ध व आवृत्ति (भोजन व घण्टी के निष्कट का सम्बन्ध)
- (3) नियंत्रित वातावरण
- (4) मानसिक स्वास्थ्य (छुत्ता पागल न हो)
- (5) लिंग व बुद्धि का प्रभाव

18/10/19

अधिगम का प्रबलन सिद्धांत

उपनाम:- सखलीकरण का सिद्धांत

Imp आवश्यकता अवकलन का सिद्धांत

Imp प्रेरणा. प्रबलन-हास

Imp क्रमबद्ध व्यवहार

Imp गणितीय सिद्धांत

Imp विधिक सिद्धांत

परिष्कृत सिद्धांत

यथार्थ का सिद्धांत

- इस सिद्धांत का नाम **Imp.** है

प्रतिपादक: **C.L. हल**, 1915

Book : व्यवहार के सिद्धांत

प्रयोग : चूहे पर

Best Line:

“सीखना आवश्यकता की पूर्ति के द्वारा होता है”
- क्लार्क हल

$$B = D \times H$$

व्यवहार = चालक $\times$ आदत

5. जैनसा सिद्धांत गणितीय सिद्धांत कहलाता है,

* प्रबलन सिद्धांत गणितीय सिद्धांत कहलाता है। इस सिद्धांत में गणित के 17 नियमों उपनियमों का प्रयोग होता है।

Formula - S - O - R

S. उद्दीपक - O. प्राप्ति - R. अनुष्णिया $\Rightarrow$ बुद्धवर्ध